उलफ़त

आदर्श दुबे

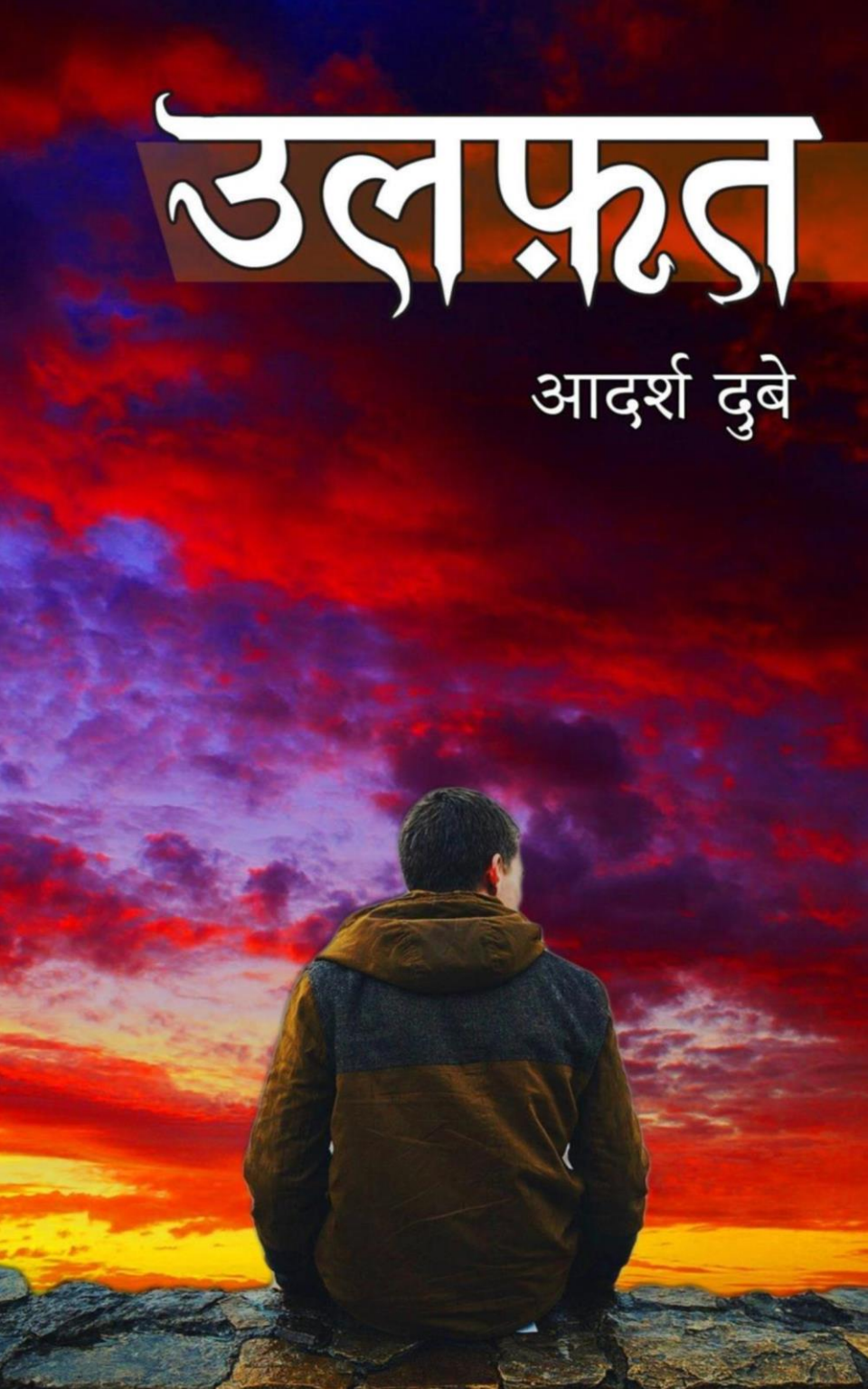

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-73-9

Price: ₹ 180.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

उलफ़त

आदर्श दुबे

अपने तारुफ में कुछ लव्ज...!

जवानी की परेशानियों से जूझता, मैं सत्रह साल का एक आम व्यक्ति हूँ। पहली बार तशरीफ़ रीवा, मध्यप्रदेश में टिकाया था। मेरे वालिद (पिता) फौज़ में थे, अब पेंशन पर जीवित हैं, पता नहीं कैसे? हम कुल मिलाकर तीन हमशीर हैं, मैं सबसे छोटा हूँ और सबसे निकम्मा भी। आज तक का मेरा सबसे बड़ा गुनाह, ग्यारवीं कक्षा में विज्ञान लेना हैं, अक्सर यह गलती बहुत से छात्र करते हैं।

भविष्य में कुछ करने का सोचा नहीं है। लिखने का थोड़ा बहुत शौक है, सोचा उसी को पूरा कर लेंते हैं। घरवाले कहतें हैं कि मैं अपना समय बर्बाद कर रहा हूँ, अब मैं उन्हें कैसे समझाऊँ, कि मेरा पढ़ने का बिलकुल भी मन नहीं करता है। और वैसे भी विज्ञान ने पूरे दिमाग का कड़ी - चावल कर दिया है।

बचपन से आर्मी स्कूल में पढ़ता आ रहा हूँ, हालांकि निकम्मा तो हूँ ही, परन्तू अनुशासन में रहना जानता हूँ।

यह किसी फिल्म की कहानी लगती है, पर ये बात बिलकुल सच है कि, इस किताब को लिखने की प्रेरणा मुझे उन तीन भोली कन्याओं से मिली, जिन्हें मैं एक साथ पूरे एक साल तक बेवकूफ़ बनाता रहा। हाँ भाई.. ! तीन

लड़कियाँ वो भी एक साथ, बहुत मुयस्सर (आसान) था, एक को विद्यालय में मुतासिर (पटाना) किया, एक को घर के पास और एक को ट्यूशन में। वैसे ये झंडा गाड़ने वाली बात नहीं है, पर वो अपने आप में ही एक अलग अहसास था।

अब क्या करें भोली शक्ल का थोड़ा बहुत फायदा तो उठाना ही पड़ता है। पकड़े जाने की कोई समस्या भी नहीं थी, और अल्लाह की मेहरबानी से मुझे निहायती ग़ारत (बर्बाद) दोस्त भी मिल चुके थे। उनका साथ मिलना तो लाज़मी था।

मैं सब कुछ कर सकता था, सिर्फ़ पढ़ाई को छोड़कर। जवानी के सारे कूकर्म करने में सक्षम था। लेकिन अब मैं बदल चुका हूँ। पढ़ाई के मामले में ना ही सही । मेरी उम्र के नौजवान कितने जफ़कश (मेहनती) होते हैं, उच्च कोटी के डॉक्टर और इंजीनियर बनने का ख़्वाब देखते हैं, परन्तु उसी के विपरीत मैं हाँथ में कलम लिए नज़्में लिखता रहता हूँ। अब मेरी ज़िंदगी का फैसला मेरी कविताएँ करेंगी, और उन्हें पढ़ने वाले लोग, यानी आप करेंगे।

पुस्तक के बारे में

एक व्यक्ति दो ही मायनों में पागल घोषित किया जाता है, चाहे वह प्यार के गम में डूबा हो, या फिर प्यार में बेहद खुश हो! पर खुशी पाने की एक जुस्तूजू होती है, जो उस व्यक्ति के ज़मीर को ज़िन्दा रखती है।

किसी का साथ मिलना या किसी से जुदाई, यह सब ज़िन्दगी की आम कड़ियाँ हैं और वक्त के साथ सारे अनुभव इंसान को और मज़बूत बनाते हैं।

अब ना तो कोई व्यक्ति अपनी खुशी से आशिक बनता है। यह सब तो समय को दस्तूर है, और मुकद्दर का फरेब।

समय के साथ यादें धुंधली पड़ती जाती है, और उन्हीं यादगार लम्हों को नज़्मों में पिरोना एक कवि की पहचान है।

जानिए क्या है – खुशी और गम? एक सत्रह साल के व्यक्ति के नज़रिये से।

''कविताएँ जो आपसे संबंध रखती हैं, आपके ध्यान का इंतज़ार कर रही है।''

विषय-सूची

जुदाई का आलम	02
ख़ामोश है खिज़ा	04
मोहब्बत का एक जोड़ा	09
अश्कों की जुबाँन	12
हालत–ए–दीवानगी	14
ख़ुशी की जुस्तूजू में	17
चली गई वो	20
वीरान थी गलियाँ	23
चश्मे वाली लड़की	26
ज़ख्मी ज़िगर	33
ख़ूबसूरती का फ़रेब	36
जुस्तूजू जिस चहरे की	38
मेरा मुकद्दर	39
डरावना ख़्वाब	43
इश्क धर्म से... या धर्म इश्क से	45
नासमझ ये दिल	49

प्यार करके देखो मज़ा आएगा 52
दूर हूँ तुझसे 55
ज़ालिम हाल–ए–दिल 57
सिर्फ तुम्हारे लिए 60
रंज़िशों की आग 62
मुझे अच्छा लगता है 66
प्यार का आख़िरी ज़ाम 68
तेरी याद में गज़ल 72
ग़म का मंज़र 74
तेरा रूख़सार 77
गम क्यों है? 79
तेरी मौजूदगी... 82
प्यार का इज़हार 84
वक्त की दरकार 86

''आशिक का दर्ज़ा पाना इस दुनिया में आसान है, सिर्फ़ भावनाओं में बहकर किसी खुदगर्ज़ से दिल लगाने की देर है।''

‘‘ज़रा सी हज़रत थी मेरी, मुकम्मल कर तो देती,
इतनी सी बात थी, ज़रा सुन तो लेती,
तो आज इस गम में, हाथों में कलम ना होती,
अगर तू साथ होती, तो कोई और बात होती’’

जुदाई का आलम

मुश्ताक [1] साँसें तेरी बदन को छूती मेरे,
तेरे गुदाज़ [2] होंठों के लम्स [3] से,
रगों में नया सा लहू दौड़ पड़े,
तेरी जुल्फ़ों की वो खुश्बू,
तेरे ज़िस्म की वो गर्मी,
धड़कने तेज़ कर जाती मेरी,
तेरे हाथों की वो नर्मी. . .

साकिब [4] निगाहें तेरी,
रुख़सार [5] का वो तेज़,
नाजुक सी अदा तेरी,
खुशनसीब हूँ तुझे पाकर मैं,
इतना मेहरबान तो खुदा भी ना था हम पर,
लगता ये तेरी सिफारिश का नतीजा है. . .

तेरी बाहों में पनाह मिली मुझे,
तेरे-मेरे दरम्याँ ज़रा भी फ़ासला ना था,
यक-लख़्त [6] ये समय के रोड़े आ गए,
जिनसे हमारा ज़रा भी वास्ता ना था. . .

---

[1]गर्म [2]नर्म [3]स्पर्श [4]चमकीली [5]चेहरा [6]अचानक

ये हिज्र [7] मंज़ूर है मुझे,
तू दूर मुझसे, मैं दूर तुझसे,
कितनी रातें काटीं फ़कत [8] मैंने,
मुझ बिन तू भी अधूरी हो चुकी होगी,
कितने मौसम आते है और जाते हैं,

पर तेरी आँखों की नमी गई ना होगी,
मैं भी यहाँ बंद आँखों से रोता हूँ,
कलम सूख जाए तो ग़मों से भिगोता हूँ,
यादों की उन लड़ियों को,
नगमों में पिरोता हूँ. . .

---

[7] जुदाई *[8] अकेले*

ख़ामोश है खिज़ा

सुन खिज़ा [1] के झोंके,
बता मुझे क्या ख़बर मेरे यार की,
कब से दीदार हुआ ना उसका,
बस चलती जाए ज़िंदेगानी इन्तज़ार की. .

मिलने की चाह में उसके,
कितने ज़ख्म सहे मैंने,
बेकरार हुए इस दिल को,
कितना समझाया मैंने,
ऐ खुदा बता मुझे,
ये खिज़ा कुछ सुनती क्यों नहीं?
ले रहा हूँ यार की ख़बर,
पर ये कुछ कहती क्यों नहीं?
क्यों ख़ामोश है खिज़ा...?
क्यों ख़ामोश है खिज़ा..

वो बहारों का समा था,
जब मिले थे मैं और तुम,
जीना मैंने सीखा तुमसे,

---

[1] पतझड़ का मौसम

उलफ़त

■ अभी सितार के तार मिले भी नहीं कि दिल के दरवाजे पर दस्तक देने लगा दर्द और तब जुदाई का आलम.....
यह एक अच्छी बात है क्योंकि वय के अठारहवें सोपान पर कदम रखते–रखते यह "उलफ़त" एक कमाल तो है। प्यार के पागलपन, सहे गये जुल्म, सितम, विरह, व्यथा का जब यह दस्तावेज है, तब संभावनाओं की फसल, निश्चित ही कुछ तो गुल खिलाएगी.....!

मोहन शशि
साहित्य सम्पादक, दैनिक भास्कर

■ "तन–मन से सुंदर कवि आदर्श दुबे किशोरावस्था में ही भावों की गहराई तक पहुँचे हैं यह आश्चर्य और सराहना का विषय है"

श्रीमती हेमप्रभा गुजराल

■ "यह आरजू लिए दिल खुशी से है भर गया,
एक नया कलमबाज लो दुनिया को मिल गया"

श्री अविनाश तिवारी

■ "यह नवोदित कोमल कवि एक दिन अवश्य सूफियाना मस्ती में झूमता हुआ विश्व पटल पर अपनी आदर्श छवी बनाऐगा"

सुश्री अनुराधा

बेबाक एवं नवोदित रचनाकार आदर्श दुबे की
अगली प्रस्तुती
"कशिश"

You can also connect to this Vibrant Author on
his Official Facebook FanPage @
Facebook.com/AdarshDubeyOfficial

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-81-19927-73-9
9 788119 927739